शिशुपालवधम् – 'शिशुपालवधम्' माघ रचित एकमात्र महाकाव्य है। बीस सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य में देवर्षि नारद के द्वारा इन्द्र का संदेश द्वारकापुरी में श्रीकृष्ण को मिलता है, उसमें शिशुपाल द्वारा जगत पर अत्याचार एवं उनकी रक्षा की प्रार्थना की गयी है। उसी समय कृष्ण को युधि-ष्ठिर के राजसूय यज्ञ का निमंत्रण मिलता है। इस कर्त्तव्य-संकट की स्थिति कृष्ण बलराम और उद्धव से सलाह करते हैं। बलराम तो शिशुपाल पर आक्रमण करने का प्रस्ताव देते हैं किन्तु उद्धव इसे बड़ी गंभीरता से स्थापित करते हैं कि युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में सेना के साथ जाना उचित होगा। वहीं यदि शिशुपाल अनर्गल व्यवहार या अशिष्ट प्रदर्शन करे तो उसे मारा जाए। उनके अनुसार श्रीकृष्ण सेना-सहित इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान करते हैं और मार्ग के विभिन्न दृश्यों का अवलोकन करते हुए इन्द्रप्रस्थ पहुँचते हैं। वहाँ यज्ञ में भीष्म द्वारा कृष्ण का विशेष सम्मान होने पर शिशुपाल उत्तेजित होकर अशिष्ट व्यवहार करता है। कृष्ण अन्ततः उसका वध कर देते हैं।

इस मूल कथानक को माघ ने अपनी कलात्मकता और विविध- वर्णनों का प्रयोग करके बड़ा कर दिया है। बड़े-2 सर्गों में विभक्त इसमें १६४५ (1645) पद्य हैं, अतिरिक्त इसमें पंद्रहवें सर्ग में ३४ (34) प्रक्षिप्त श्लोक हैं, टीका नहीं की है। के कारण मल्लिनाथ ने इनपर जिन्हें मिलाकर माघ की रचना पाँच पद्य कविवंश के वर्णन हैं, १६५० (1650) पद्यों की है।

यह कथानक महाभारत के सभापर्व (अध्याय ३५-४३ (35-43)) से लिया गया है, जिसमें युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल-वध की कथा है। श्रीमद्भागवतपुराण के दशम स्कन्ध (अध्याय ७१-७५ 71-75) में भी शिशुपालवध की कथा प्रायः वैसी ही है। इसलिए बहुत से विद्वान इसे भी इस महाकाव्य का उपजीव्य मानते हैं। B.A. Ist + II Yr.

शिशुपालवध महाकाव्य के लक्षणों को सर्वाधिक ग्रहण करनेवाला महाकाव्य है। इसीलिए विद्वानों के बीच एक लोकोक्ति है — 'काव्येषु माघः कवि कालिदासः' अलंकारवादी कवियों में भी माघ अग्रणी हैं क्योंकि प्रौढ़ पाण्डित्य के साथ कथानक को अद्भुत मार्ग पर ले जाने की क्षमता भी माघ में ही है। कृष्ण को कर्त्तव्य के प्रति उत्साहयुक्त दिखाकर सर्वत्र कवि ने अपने प्रधान रस वीर के साथ-2 शृंगार, अद्भुत, भयानक, हास्य इत्यादि का स्वाभाविक निवेश हुआ है।

महाकाव्य के गौण उपादानों का निवेश 'शिशुपालवध' में अधिक मिलता है। 'श्रियः' इस मंगलप्रद शब्द से आरंभ होनेवाले इस महाकाव्य में वस्तुनिर्देश के रूप में ही प्रस्तुति है 'आशीर्वाद' या 'नमस्कार' नहीं। परम्परागत वर्णनों की प्रचुरता है। कलापक्ष और भावपक्ष दोनों को सजाने में माघ की प्रस्तुति विलक्षण है। 'शिशुपालवध' के सभी वर्णन उत्कृष्ट हैं, किन्तु षष्ठ सर्ग का षड्ऋतुवर्णन एवं एकादश सर्ग का प्रभात वर्णन विशेष उल्लेखनीय है।

महाकवि कालिदास की विशिष्टता 'उपमा' के कारण है, भारवि का प्रधान गुण 'अर्थगौरव' है, दण्डी की विशिष्टता 'अर्थलालित्य' के कारण है तो माघ में तीनों गुणों का समन्वित (इकट्ठा) प्रयोग प्रमुख वैशिष्ट्य है — 'उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः (नैषधे) पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।'

संगीतशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों का सहज उपयोग होने से उनकी संगीतज्ञता भी ज्ञात होती है। प्रकृति के वर्णन में उनकी तन्मयता, राजनीति के संवादों एवं रहस्यात्मकता - वे दोनों अद्भुत हैं।

UMA PATHAK
Dept. of Skt.